RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : MISC/CPM/01/KPHO/2019-21
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

अगस्त-2021 | वर्ष - 13 | अंक : 07 | मूल्य : 5/-

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश : सुनीता धीमान, 414/12, शास्त्री नगर, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 9450871741
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय : 40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल : पुष्पेन्द्र गौतम, मल्हौसी, औरेया, उ.प्र. मो.: 9456207206
हरियाणा राज्य : डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : दिलीप कुमार कोसले, मो. : 09424168170
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001, मो. : 09887512360, 0144-3201516
चिरंजीलाल बैरवा (व्यावस्थापक) मेहरा आदर्श विद्या मन्दिर, भीम नगर कालोनी, राज भट्टा, दिल्ली रोड, अलवर, जिला-अलवर, मो.-09829855349
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय : ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.) मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

जन्माष्टमी

भाद्र मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को कृष्ण का जन्म हुआ था। कृष्ण को हिन्दु 16 कलाओं वाला 10 अवतारों में एक अवतार मानते हैं और भगवान मानकर उनकी अराधना करते हैं। इस दिन जन्मोत्सव की झांकियाँ निकाली जाती हैं, व्रत रखा जाता है और ब्राह्मणों को भोजन व दान दिया जाता है। रासलीला होती है। गीता का पाठ किया जाता है और महाभारत की कथा कही जाती है। कृष्ण की जन्माष्टमी का आयोजन आर्य अनार्य संघर्ष, एवं अनार्य दमन की स्मृति का पर्व है। एक कथा इस प्रकार है।

एक राजा केदार था। वृन्दा उसकी कन्या थी। श्रीकृष्ण उसे ले गए। जहाँ वृन्दा रही थी वह वृन्दावन पड़ा। मथुरा मधुनामक एक दैत्य वंशी अनार्य राजा ने बसाई थी शत्रुघ्न से मधु की लड़ाई हुई थी और धोखे से मधु को मारकर आर्यों ने मथुरा छीन ली थी। द्वापुर में भोजवंशी अनार्य राजा उग्रसेन के लड़के कंश ने अधिकार कर लिया था और वह राज्य कर रहा था। कंश की बहन देवकी थी उसका विवाह युद वंशी सरदार वसुदेव से हुआ था। वह भी अनार्य था। इनमें बहुत प्रेम था। यह बात आर्यों को खटकती थी। आर्य पुरोहित नारद ने कंश व वसुदेव में लड़ाई कराने के लिए कान भरे कि देवकी का 8वां बच्चा तुम्हारा काल है। कंश धोखे में आ गया। जब पहला बच्चा हुआ तो कंश ने छोड़ दिया पर नारद ने फिर गुमराह किया कि हर बच्चा आठवाँ हो सकता है, तो गुमराह कर उस बच्चे को जल्लादों से मरवा डाला और बराबर हर बार आकर नारद बच्चे के पैदा होते ही मरवा डालता था। इस प्रकार 7 सन्तानें मरवा दी गई। आठवीं सन्तान कृष्ण थे। आर्य पुरोहित नारद आदि ने पैहरे के सिपाहियों को लालच देकर अपनी ओर मिला लिया और चोरी-चोरी फाटक खोल कर वसुदेव व कृष्ण को निकाल ले गए। इधर कान भरकर वसुदेव को कंश के और कंश को वसुदेव के विरूद्ध कर दिया। आपसी संघर्ष के होने पर ही आर्य कंश पर विजय पा सकते थे यह ब्राह्मण आर्यों की योजना थी। एक कन्या कृष्ण के स्थान पर ला दी गई और कंश को धोखा दिया गया। नारद ने इसे भी एक धोवी द्वारा कंश से कहकर मरवा डाला। कृष्ण जब बड़े हुए तो नारद ब्राह्मण ने उन्हें भड़काया कि कंश ने तुम्हारे सात भाई मरवा डाले हैं। इस पर कृष्ण कंश के दुश्मन हो गए, और ब्राह्मण आर्यों की सहायता से उन्होंने कंश को मार डाला। आर्य लोग कृष्ण का जन्म मनाते हैं जो आर्य और अनार्य संघर्ष और अनार्य राजा कंश के विनाश की स्मृति में मनाया जाता है। विडम्बना है कि शूद्र अपने वंश के राजा कंश के हत्यारों के इशारे पर असली याद भूलकर इसे पर्व की भांति मनाते हैं। यह उनके मनाने का त्यौहार नहीं है।

विधि-विधान – अष्टमी के दिन रात में गीत तथा बाजों के साथ जागरण किया जाता है। कृष्ण जन्म की कथा कही जाती है और ब्राह्मणों को भोजन तथा दक्षिणा से सन्तुष्ट किया जाता है। इस दिन जन्मोत्सव की झाकियाँ सजाई जाती हैं। झाकियों में देश का अरबों रूपया एक रात में नष्ट हो जाता है जो बनियों के पेट में चला जाता है। रात में कृष्ण मन्दिरों में पूजा होती है और जवान स्त्री पुरूष उन्मत्त होकर नाच करते हैं।

उद्देश्य एवं रहस्य – शूद्र दमन की यादगार का यह व्रत है ही परन्तु शूद्रों के पूर्वज कंश की हत्या को एक दुराचारी आदमी के रूप में प्रदर्शित कर शूद्र मस्तिष्क में कंश के प्रति घृणा पैदा करने के उद्देश्य से यह व्रत मनाया जाता है ताकि शूद्र कंश की हत्या जो ब्राह्मण और कृष्ण के षड़यन्त्र से की गई है, भूल जाएँ। कृष्ण एक राजद्रोही था, गैंग बनाकर कृष्ण ने कंश राज्य के विरूद्ध विद्रोह किया ग्वालों की गैंग बनाई। कंश को कृष्ण ने आर्यों से मिलकर मारा और बाद को इन्द्रादि आर्य राजाओं ने कृष्ण से युद्ध किया और फूट डालकर एक के बाद दूसरे शूद्र राजाओं को मारकर समाप्त करने की योजना बनाई पर कृष्ण मजबूत निकला हार नहीं मानी और विजय पाई। इस गद्दारी को छिपाने के लिए और खुश करने के लिए आर्य पुरोहित ने कृष्ण जन्म पर्व के रूप में मनाना आरम्भ कर दिया।

कृष्ण यद्यपि आर्य नहीं था पर वह कुल द्रोही था। अपने ही अनार्य वंश नाश हेतु वह आर्यों से मिल गया। आर्यो के साथ छल कपट से उसने मात्र राज्य पाने के लिए कंश को मारा, शिशुपाल का वध किया और नाग वंशी राजा कलिया को आर्य ग्वालों को साथ ले जाकर मारा। वह आर्यों से मिल गया और नीच बना। उसने युधिष्ठिर के यज्ञ में जूठन खाई और उठाई तथा नाई की तरह दुर्योधन की पैर चप्पी की, अर्जुन का रथ हांका और अनार्यों की हत्याएँ कराता रहा। कीचक अनार्य को पाण्डवों से मिलकर मरवा डाला। कृष्ण कहीं का राजा नहीं था पर उसने ग्वालों की गैंग बना ली थी। वह राज्य लोभ से अनार्य वंश की हत्याएँ कराता रहा। आर्यों का प्रिय बना रहा। उसके इन कुकर्मों को छिपाने और अनार्य दमन को आर्यों ने उचित ठहरने के उद्देश्य से उसको अवतार की मान्यता देकर भगवान बना दिया। कृष्ण ने इतना ही नहीं किया, उसने तो गीता में शूद्र को नीच कहा और ब्राह्मणों की हां में हां मिलाकर शूद्र को पैरों से पैदा हुआ बताया इसके फलस्वरूप सारा अनार्य वर्ग नीच और अधम बन गया। कृष्ण की वाणी को ईश्वरीय विधान प्रमाणित करने के लिए कृष्ण को ही भगवान बना दिया। पर आर्य ब्राह्मण, क्षत्री ने अपनी पूजा कृष्ण से कराई। कृष्ण के तमाम विलासिता, व्यभिचार, बलात्कार, अनाचार और पाप कर्म करने के बाद भी उसे अवतार कहते रहे, यह उनकी चाल थी क्योंकि ये सारे पाप कर्म वह अनार्य स्त्री वालाएँ पुरूष एवं राजाओं के ही साथ करता था। स्मरण रहे कृष्ण की जन्माष्टमी का पर्व शूद्र विरोधी है और शूद्रों का यह त्यौहार नहीं है, यद्यपि कृष्ण शूद्र था।

कृष्ण ने कौरव पाण्डवों को लड़ाकर दोनों वंशों का नाश करवा दिया कौरवों को युद्ध में मरवा डाला और पाण्डवों को हिमालय में गला कर मार डाला। इतना ही नहीं कृष्ण ने अपने वंश में कलह पैदा कर दी और यदुवंश का विनाश करवा दिया। अन्त में वह मथुरा छोड़कर द्वारिका को भाग गया वहाँ एक बहेलिए ने मार डाला। चूँकि ब्राह्मण पेटू है अपनी पूजा और दान का लालची है उसने इस अवसर पर भी दान धन लेने के लालच से कृष्ण जन्म अष्टमी के मनाने का महात्म्य स्थापित कर दिया है। जेल के फाटक अपने आप खुल गए, सन्तरी सो गए और द्वार अपने आप बन्द हो गए यह पाखण्ड अन्ध विश्वास का प्रतीक है और कौतूहल जाहिर करने के उद्देश्य से यह कहानी झूठी गढ़ी है।

साभार
हिन्दुओं के वृत पर्व और त्यौहार
पृ.सं. 39 से 40 तक।
स० : एस.एल. सागर

द्रविड़ भारत मासिक पत्रिका परिवार के सभी लोगों को 75वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं .....

कार्य करने की वास्तविक स्वतंत्रता केवल वहीं पर होती है, जहाँ शोषण का समूल नाश कर दिया जाता है, जहाँ एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर अत्याचार नहीं किया जाता, जहाँ बेरोजगारी नहीं है, जहाँ गरीबी नहीं है, जहाँ व्यक्ति को अपने धंधे के हाथ से निकल जाने का भय नहीं है, अपने कार्यों के परिणामस्वरूप जहाँ व्यक्ति अपने धंधे की हानि, घर की हानि तथा रोजी-रोटी की हानि के भय से मुक्त है।

डा. भीमराव अम्बेडकर

मजदूर और संसदीय लोकतंत्र

(इंडियन फैडरेशन ऑफ लेबर के तत्त्वाधान में 8 से 17 सितम्बर, 1943 तक दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय कार्मिक संघ के कार्यकर्ताओं के अध्ययन शिविर के समापन सत्र में दिया गया भाषण)

मैं आपके सचिव का आभारी हूं कि उन्होंने मुझे आज संध्या–समय यहां आने और भाषण देने के लिए आमंत्रित किया है। मैं इस निमंत्रण को स्वीकार करने में झिझक रहा था जिसके दो कारण थे। पहली बात तो यह कि मैं शायद ही कोई ऐसी बात कह सकता हूं जिससे सरकार बंध जाये। दूसरे, मैं मजदूर संघ के बारे में भी जिसमें आप मुख्य रूप से रूचि रखते हैं, बहुत कम कह सकूंगा। मैंने इस निमंत्रण को इसलिए स्वीकार किया है कि आपके सचिव किसी प्रकार भी मेरी 'ना' स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। मैंने भी यह महसूस किया कि शायद मेरे लिए यह सर्वोत्तम अवसर है जब मैं भारत के श्रम संगठन पर अपने विचार व्यक्त कर सकूंगा जो मेरे मन में सर्वोपरि स्थान बनाए हुए हैं और जिसके बारे में मैंने सोचा कि वे लोग भी दिलचस्पी ले सकते हैं जो मुख्य रूप से मजदूर–संघवाद में रूचि रखते हैं।

मानव समाज की सरकार कुछ बहुत अहम परिवर्तनों से गुजरी है। एक ऐसा भी समय था जब मानव समाज की सरकार के निरंकुश शासक तानाशाही शासन चलाते थे। यह सरकार एक लम्बे और खूनी संघर्ष द्वारा संसदीय लोकतंत्र के नाम से प्रसिद्ध शासन पद्धति में बदल गई। यह महसूस किया गया कि यह शासन पद्धति सर्वश्रेष्ठ है। यह विश्वास किया गया कि यह एक ऐसा स्वर्णिम युग लायेगी जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता, सम्पत्ति और खुशहाली का अधिकार प्राप्त होगा। इन आशाओं का अच्छा आधार भी था। संसदीय लोकतंत्र में विधायिका होती है जो जनता की आवाज अभिव्यक्त करती है, कार्यकारिणी भी होती है जो विधायिका के अधीन होती है और उसे विधायिका की आज्ञा का पालन करना होता है। विधायिका और कार्यकारिणी के ऊपर न्यायपालिका का अधिकार होता है और न्यायपालिका इन दोनों को निर्धारित सीमाओं में बांधे रखती है। संसदीय लोकतंत्र में लोकप्रिय सरकार के सभी चिन्ह होते हैं। इस प्रकार की सरकार लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए होती है। इसलिए यह आश्चर्य की बात है कि संसदीय लोकतंत्र के विरूद्ध विद्रोह हुआ है यद्यपि एक शताब्दी भी नहीं बीती है जबकि इसकी व्यापक रूप से स्वीकृति हुई। इस पद्धति के विरूद्ध इटली, जर्मनी, रूस और स्पेन में विद्रोह हुआ है, और कुछ ही ऐसे देश हैं जहां संसदीय लोकतंत्र के विरूद्ध असंतोष नहीं है। संसदीय लोकतंत्र के विरूद्ध इस बेचैनी और असंतोष का क्या कारण है? यह प्रश्न विचार करने योग्य है। कोई भी ऐसा देश नहीं है जहां इस प्रश्न पर विचार करने की तात्कालिकता भारत से अधिक हो। भारत संसदीय लोकतंत्र की स्थापना के बारे में बातचीत कर रहा है। किसी ऐसे व्यक्ति की बहुत आवश्यकता है जिसमें भारतीयों से यह कहने के लिए पर्याप्त साहस हो कि संसदीय लोकतंत्र से बचिए। यह सर्वोत्तम पद्धति नहीं है जैसा कि वह दिखाई देती है।

संसदीय लोकतंत्र क्यों असफल हुआ? तानाशाहों के देश में यह पद्धति असफल हुई क्योंकि यह ऐसी व्यवस्था है जिसकी गति बहुत धीमी है। यह पद्धति तीव्र कार्रवाई में विलम्ब करती है। संसदीय लोकतंत्र में कार्यकारिणी को उस विधायिका द्वारा रोका जा सकता है जो उन कानूनों को पारित करने के लिए इन्कार करे जिन्हें कार्यकारिणी चाहती है, और यदि विधायिका इन कानूनों को पारित करने में देर न करे तो न्यायपालिका ऐसे कानूनों को अवैध घोषित कर देर कर सकती है। संसदीय लोकतंत्र तानाशाही को खुली छूट नहीं देता। इसीलिए इटली, स्पेन और जर्मनी जैसे देशों में लोकतंत्रीय पद्धति की अवहेलना की जाती है जहां तानाशाहों का शासन है। यदि केवल तानाशाह की संसदीय लोकतंत्र के विरूद्ध होते तो कोई अंतर नहीं पड़ता। संसदीय लोकतंत्र के विरूद्ध उनकी शहादत कोई माने नहीं रखती। वास्तव में संसदीय लोकतंत्र का इस कारण स्वागत किया जा सकता है कि वह तानाशाही पर प्रभावकारी नियंत्रण रख सकती है। परन्तु दुर्भाग्यवश, उन देशों में भी संसदीय लोकतंत्र के विरूद्ध भारी असंतोष है जहां लोग तानाशाही के विरोधी हैं। यह संसदीय लोकतंत्र के बारे में सबसे खेदजनक तथ्य है। इससे भी अधिक खेदजनक यह है कि संसदीय लोकतंत्र कहीं थमा नहीं है। इसने तीन दिशाओं में प्रगति की है। राजनीतिक अधिकारों की समता की धारणा के विस्तार द्वारा इसकी प्रगति हुई है। संसदीय लोकतंत्र वाले ऐसे बहुत कम देश हैं जहां वयस्क मतदात हो। इस पद्धति ने सामाजिक समता और आर्थिक अवसर के सिद्धांत को स्वीकार किया है और तीसरे इसकी मान्यता यह है कि जो संस्थाएं अपने उद्देश्य में समाज–विरोधी हैं वे राज्य की अवहेलना नहीं कर सकती। किन्तु यह सब कुछ होते हुए भी, उन देशों में संसदीय लोकतंत्र के विरूद्ध भारी बेचैनी है जो लोकतंत्र के प्रति वचनबद्ध हैं। ऐसे देशों में असंतोष के कारण स्पष्टतया वे उन देशों से अलग हैं जो तानाशाही देश कहलाते हैं। इसमें विस्तार से जाने का समय नहीं है। परन्तु सामान्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि संसदीय लोकतंत्र के प्रति असंतोष इस अनुभव के कारण है कि यह आम जनता के लिए स्वतंत्रता, संपत्ति अथवा खुशहाली के अधिकार के आश्वासन के प्रति असफल रहा है। यदि यह सच है, तो उन कारणों को जानना महत्वपूर्ण है जिनके फलस्वरूप यह असफलता प्राप्त हुई है। इस असफलता के मूल में गलत विचारधारा अथवा गलत संगठन अथवा दोनों ही हो सकते हैं। मेरे विचार से दोनों में ही ये कारण खोजे जा सकते हैं। संसदीय लोकतंत्र को दूषित करने वाली विचारधारा के बारे में मैं केवल दो बातें कह सकता हूं। मुझे इस बात में संदेह नहीं है कि संसदीय लोकतंत्र को नष्ट करने वाली चीज है करार की स्वतंत्रता का विचार। इस विचार को बड़ा पुनीत माना गया और इसे स्वतंत्रता के नाम पर स्वीकार किया गया। संसदीय लोकतंत्र ने आर्थिक असमानताओं की ओर ध्यान नहीं दिया और इस बात पर विचार नहीं किया कि करार करने वाले पक्षों की स्वतंत्रता के परिणाम क्या निकलेंगे, यदि वे पक्ष असमान हों। इसने इस बात की परवाह नहीं की कि करार की स्वतंत्रता ने सशक्त को यह अवसर दिया कि वह कमजोर को धोखा दे सकता है। इसका परिणाम यह हुआ है कि संसदीय लोकतंत्र ने स्वतंत्रता की अग्रणी हिमायती होते हुए गरीबों, दलितों और वंचितों की आर्थिक विषमताओं को और बढ़ाया है। दूसरी गलत विचारधारा जिसने संसदीय लोकतंत्र को दूषित किया है, यह समझ पाने की असफलता जहां कोई भी सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र न हो वहां राजनीतिक लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता। इस उक्ति पर कोई भी प्रश्न उठा सकता है। ऐसे लोगों से जो इसके बारे में प्रश्न उठाते हैं मैं एक प्रति–प्रश्न करना चाहूंगा। इटली, जर्मनी और रूस जैसे देशों में संसदीय लोकतंत्र इतनी सरलता से क्यों असफल हो गया? यह पद्धति इंग्लैंड और अमरीका में इतनी सरलता से भंग क्यों नहीं हुई? मेरे विचार से इसका केवल एक उत्तर है – अर्थात् इन दोनों देशों में पहले बताए गए देशों की अपेक्षा अधिक सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र है। सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र राजनीतिक लोकतंत्र के स्नायु और तंत्र हैं। ये स्नायु और तंत्र जितने अधिक मजबूत होते है, उतना ही शरीर सशक्त होता है। लोकतंत्र समानता का दूसरा नाम है। संसदीय लोकतंत्र ने स्वतंत्रता की चाह का विकास किया, परन्तु समानता के प्रति इसने नकारात्मक रूख अपनाया। यह समानता के महत्व को अनुभव करने में असफल रहा और इसने स्वतंत्रता तथा समानता के बीच संतुलन बनाने के लिए प्रयास नहीं किया जिसका परिणाम यह हुआ कि स्वतंत्रता ने समानता को निगल लिया तथा असमानता को पनपने दिया।

मैंने उन गलत विचारधाराओं का उल्लेख किया जो मेरे विचार से संसदीय लोकतंत्र की असफलता के लिए उत्तरदायी हैं। परन्तु मुझे इस बात का यकीन है कि गलत विचारधारा से भी अधिक लोकतंत्र का त्रुटिपूर्ण संगठन इसकी असफलता के लिए उत्तरदायी है। सभी राजनीतिक समाज दो वर्गों में विभाजित होते हैं – शासक और शासित। यह एक अनिष्टकर बात है। यदि यह बात यही रुक जाती तो अधिक तूल न पकड़ती। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि यह विभाजन इतना दकियानूसी और संतुष्टिदायक बन जाता है कि शासक सदैव शासक वर्ग के होते हैं और शासित वर्ग कभी भी शासक वर्ग नहीं बन सकता। लोग स्वयं को शासित नहीं करते अपितु वे एक सरकार की स्थापना करते हैं और उस सरकार को स्वयं पर शासन करने के लिए मुक्त छोड़ देते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि यह सरकार उनकी नहीं है। यह स्थिति होने के कारण संसदीय लोकतंत्र की कभी भी ऐसी सरकार नहीं बन पायी जो लोगों की हो अथवा लोगों द्वारा हो, और यही कारण है कि यह सरकार कभी भी लोगों के लिए नहीं बनी। संसदीय लोकतंत्र लोकप्रिय सरकार का ताना–बाना होते हुए भी वास्तव में एक वंशानुगत शासक वर्ग द्वारा वंशानुगत प्रजा वर्ग की सरकार है। यही उस राजनीतिक जीवन का अनिष्टकारी संगठन है जिसने संसदीय लोकतंत्र को बिलकुल असफल बनाया है। यही कारण है कि संसदीय लोकतंत्र ने उस आशा की पूर्ति नहीं की जिसे उसने मानव की स्वतंत्रता, सम्पत्ति और खुशहाली को सुनिश्चित करने के लिए जनसाधारण तक पहुंचाया था।

प्रश्न यह है कि इसके लिए उत्तरदायी कौन है? इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि संसदीय लोकतंत्र गरीब मजदूर और दलित वर्गों को लाभ पहुंचाने में असफल हुआ है, तो यही वे वर्ग हैं जो मुख्यतया इस स्थिति के उत्तरदायी हैं। सर्वप्रथम, इन वर्गों ने मानव जीवन में आर्थिक तत्व के प्रभाव के प्रति निपट उदासीनता दिखलाई है। हाल ही में किसी ने ''एंड ऑफ द इकनॉमिक मैन (आर्थिक व्यक्ति का अंत)'' नामक पुस्तक लिखी है। हम वास्तव में 'एंड ऑफ द इकनॉमिक मैन की चर्चा नहीं कर सकते जिसका आम कारण यह है कि आर्थिक व्यक्ति कभी भी उत्पन्न नहीं हुआ। मार्क्स के विरूद्ध यह कही जाने वाली बात है कि मनुष्य केवल रोटी के सहारे ही जीवित नहीं रहता, दुर्भाग्यवश सच है। मैं कारलाइल के इस विचार से सहमत हूं कि सभ्यता का उद्देश्य यह नहीं है कि मनुष्य केवल मोटा बनाया जाए जैसा कि हम सुअरों को बनाते रहते हैं। इस उस स्थिति से बहुत दूर हैं। सुअरों के समान मोटा होना तो दूर, श्रमिक वर्ग भूखा मर रहा है और हम चाहते हैं कि उनके लिए सर्वप्रथम रोटी की व्यवस्था की जाए और बाद में किन्हीं अन्य वस्तुओं की।

मार्क्स ने इतिहास की आर्थिक व्याख्या के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसकी वैधता के बारे में भारी मतभेद उभरा। मेरे विचार से मार्क्स ने इसे सिद्धांत के रूप में नहीं वरन् श्रमिकों को दिशा दिखाने के रूप में प्रतिपादित किया था कि यदि श्रमिक वर्ग अपने आर्थिक हितों को सर्वोपरि महत्व दे, जैसा कि स्वामी–वर्ग अपने हितों को देता है, तो इतिहास जीवन के आर्थिक पहलुओं को पहले से बेहतर तरीके से उजागर करेगा। यदि इतिहास की आर्थिक व्याख्या का सिद्धांत पूर्णतया सत्य नहीं है, तो इसका कारण यह है कि कुल मिलाकर श्रमिक वर्ग आर्थिक तथ्यों को वह आवश्यक शक्ति देने में असफल हुआ है जो वह सहयोगी जीवन को दिशा के रूप में उसे प्रदान करती है। श्रमिक वर्ग मानवता की सरकार से संबंधित साहित्य से अपने को अवगत कराने में असफल हुआ है। श्रमिक वर्गों के प्रत्येक व्यक्ति को

श्रमिकों की परिस्थितियों के बारे में रूशो के सोशल कान्ट्रेक्ट, मार्क्स के कम्युनिस्ट मैनीफैस्टो और पोप लियो XIII के एनसाइक्लिकल के विचारों और जान स्टुअर्ट मिल के स्वतंत्रता के विचारों से अवगत होना चाहिए। आधुनिक समय के सामाजिक और सरकारी संगठन के आधारभूत कार्यक्रम दस्तावेजों में मैंने केवल चार का उल्लेख किया है, परन्तु श्रमिक वर्ग इन पर उतना ध्यान नहीं देगी जितनी आवश्यकता है। इसके विपरीत श्रमिकों को प्राचीन सम्राटों और महारानियों की असत्य और कल्पित कहानियों के पढ़ने में आनंद आता है और वे इस प्रकार का साहित्य पढ़ने के आदी हो गए हैं।

एक अन्य और बड़ा अपराध है जो उन्होंने स्वयं अपने विरूद्ध किया है। उन्होंने सरकार में अपना वर्चस्व स्थापित करने की महत्वाकांक्षा विकसित नहीं की है, और वे इस बात की आवश्यकता नहीं समझते कि उनके हितों की रक्षा के लिए सरकार पर उनका नियंत्रण होना चाहिए, यहां तक कि सरकार में उनकी कोई दिलचस्पी ही नहीं है। उन तमाम त्रासदियों में जिन्होंने मानवता को उथल–पुथल किया है, यह सबसे बड़ी त्रासदी है। कोई भी संगठन हो उसने मजदूर संघ का स्वरूप धारण कर लिया है। मैं मजदूर संघों का विरोधी नहीं हूं। उनसे बहुत उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति होती है। परन्तु यह मान लेना सबसे बड़ी भूल होगी कि मजदूर संघ श्रमिकों की सभी व्याधियों के लिए रामबाण है। मजदूर संघ कितने ही सशक्त क्यों न हो, फिर भी ये इतने शक्तिशाली नहीं होते कि पूंजीवादियों को पूंजीवाद सही प्रकार चलाने को बाध्य कर सकें। मजदूर संघ तभी अधिक प्रभावकारी होंगे जब उनके पीछे श्रमिकों की एक विश्वसनीय सरकार हो। श्रमिकों का यह उद्देश्य होना चाहिए कि वे सरकार पर नियंत्रण करना अपना लक्ष्य बनाएं। जब तक कि मजदूर संघवाद का उद्देश्य सरकार के नियंत्रण का नहीं होता, तब तक मजदूर संघ कामगारों को बहुत कम लाभ पहुंचा सकेंगे और मजदूर संघ नेताओं के बीच अनवरत तकरार का स्त्रोत बने रहेंगे।

श्रमिक वर्गों का तीसरा दुर्बलकारी पाप यह है कि वे उस सरल मार्ग को अपनाते हैं जो उन्हें राष्ट्रीयता की अपील द्वारा भ्रमित कर देता है। श्रमिक वर्ग प्रत्येक दशा में कंगाल है और उसके पास देने के लिए नाम मात्र का धन है, परन्तु वह प्रायः तथाकथित राष्ट्रीयता के उद्देश्य के लिए अपना सभी कुछ बलिदान कर देता है। श्रमिक वर्गों ने भी यह जानने की चिंता नहीं की कि जिस राष्ट्रीयता के लिए वे बलिदान कर रहे हैं तो क्या यह राष्ट्रीयता स्थापित होने के पश्चात, उन्हे सामाजिक और आर्थिक समता प्रदान करेगी। अधिकतर मामलों में, स्वतंत्र राष्ट्रीय देश जिसका उद्भव सफल राष्ट्रवाद से हुआ है और जो श्रमिकों के बलिदानों से पोषित हुआ है, अपने सत्ताधारी स्वामियों के अंतर्गत सर्वहारा वर्ग का शत्रु बन जाता है। यह शोषण की सबसे खराब स्थिति है जो श्रमिकों ने स्वयं ही अपने ऊपर अधिरोपित कर ली है।

यदि श्रमिक वर्ग को संसदीय लोकतंत्र पद्धति के अंतर्गत रहना है तो उसे यथासंभव सर्वोत्तम साधन तैयार करने चाहिए जिनके द्वारा उस पद्धति को वह अपने लाभ–कार्यों में प्रयुक्त कर सके। जहां तक मैं समझता हूं, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दो बातें आवश्यक हैं। पहली बात यह है कि मजदूर संघों की मात्र स्थापना को भारत के श्रमिकों के अंतिम उद्देश्य और प्रयोजन की दृष्टि से नकारा जाए। इसे यह घोषणा कर देनी चाहिए कि इसका उद्देश्य श्रमिकों की सरकार बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इसे एक राजनीतिक श्रम पार्टी संगठित करनी चाहिए। ऐसी पार्टी में मजदूर संघ तो निश्चित रूप से होंगे ही, परन्तु इसे संघवाद के संकीर्ण और निरूद्ध करने वाले दृष्टिकोण से, अंतिम लाभ के स्थान पर तात्कालिक लाभ पर जोर देने से और श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करने में मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं के निहित स्वार्थ से मुक्त रखा जाना चाहिए। इसके साथ ही इसे साम्प्रदायिक अथवा पूंजीवादी राजनीतिक पार्टियों यथा हिंदू महासभा अथवा कांग्रेस से अलग किया जाना चाहिए। श्रमिकों के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे कांग्रेस अथवा हिंदू महासभा अथवा इनमें से किसी शिविर के महज इसलिए अनुयायी बने कि वे संस्थाएं भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने का दावा करती हैं। श्रमिक अपने ही प्रकार के अलग राजनीतिक संगठन द्वारा इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं। श्रमिक कांग्रेस और हिंदू महासभा दोनों के ही चंगुल से मुक्त होकर भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई अधिक अच्छे ढंग से लड़ सकते हैं। श्रम संगठन राष्ट्रवाद के नाम पर धोखा खाने से अपने आपको रोक सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि श्रम संगठन भारतीय राजनीति की अविवेकता के विरूद्ध सशक्त अवरोध के रूप में कार्य कर सकता है। कांग्रेस राजनीति का दावा है कि वह क्रांतिकारी है। यही कारण है कि इसके अनेक अनुयायी बन गए हैं। परन्तु यह भी सत्य है कि कांग्रेस राजनीति ने कुछ भी प्राप्त नहीं किया है, अपितु नैराश्य ही उत्पन्न किया है। इसका कारण यह है कि कांग्रेस की राजनीति अत्यधिक अविवेकी है और इस अविवेक का सबसे बड़ा कारण यह है कि कांग्रेस का कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है। भारत के श्रमिकों की एक पार्टी इस अविवेक को दूर करने के लिए, जिसने गत दो दशकों में भारतीय राजनीति पर अपना आधिपत्य जमा लिया है, सबसे अधिक कारगर सिद्ध होगी। दूसरी बात यह है कि भारत के श्रमिकों को यह अनुभव करना है कि ज्ञान के बिना शक्ति नहीं आती। जब श्रमिकों की कोई पार्टी भारत में बनाई जाये और जब यह पार्टी चुनाव से पूर्व गद्दी पर बैठने का अपना दावा करे तो प्रश्न यह उठेगा कि क्या श्रमिकों की पार्टी शासन करने योग्य है? यह उत्तर देना ठीक नहीं होगा कि श्रमिक अन्य वर्गों की तुलना में देश अथवा विदेश के मामलों में कम कुशलता अथवा दिवालियापन नहीं दिखायेंगे। श्रमिकों को ठोस तरीके से यह सिद्ध करना होगा कि वे अधिक कुशलता से शासन कर सकते हैं। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि श्रमिकों की सरकार का स्वरूप अन्य वर्गों की अपेक्षा अधिक कठिन है। श्रमिकों की सरकार 'अहस्तक्षेप नीति' की सरकार नहीं बन सकती। यह ऐसी सरकार होगी जो वस्तुतः नियंत्रण की पद्धति पर आधारित होगी। नियंत्रण की पद्धति में 'अहस्तक्षेप नीति' की सरकार की अपेक्षा अधिक ज्ञान और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्यवश भारत के श्रमिकों ने अध्ययन के महत्व को नहीं समझा है। भारत के श्रमिकों के नेताओं ने यह सीखा है कि उद्योगपतियों को किस प्रकार बुरा–भला कहा जाए। श्रमिकों के नेताओं की अंततोगत्वा भूमिका यह रही है कि उन सब को अधिक से अधिक बुरा–भला कहें।

इसलिए मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि इंडियन फेडरेशन ऑफ लेबर ने यह कमी पहचान ली है और श्रमिकों के वर्गों के लिए अध्ययन की व्यवस्था है जिससे श्रमिक शासन करने योग्य बन जायेंगे। मुझे आशा है कि फेडरेशन अन्य आवश्यकता यथा श्रमिकों की पार्टी के उद्घाटन को नहीं भूलेगी। जब यह कार्य संपन्न हो जाये तो फेडरेशन धन्यवाद की पात्र होगी कि उसने वर्गों को शासक वर्ग की प्रतिष्ठा दिलाने के लिए उन्हें उच्च स्थान पर बिठाया।

साभार :
बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय खण्ड–18, पेज संख्या 95 से 101 तक
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

जिंदगी के पुरस्कार दिलाने वाली नौ आदतें

श्रोता हॉल के पीछे जाने लगे। कुछ मंच की तरफ बढ़े, ताकि वे वक्ता से सवाल पूछ सकें, लेकिन तब तक वह गायब हो चुका था।

एक घंटे बाद हर श्रोता अपनी जगह पर लौट आया था। इस बार किसी ने भी घर जाने के बारे में नहीं सोचा। वे सब उन आदतों के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे, जिनसे उन्हें अमीरी की चाबी पाने में मदद मिलेगी।

कुछ पल बाद जब सब लोग अच्छी तरह बैठ गए, तो वक्ता मंच पर लौट आया।

उसने कहा, ''मुझे यह देखकर खुशी हुई कि सभी लौट आए हैं। मैंने वादा किया था कि मैं आपको उन नौं आदतों के बारे में बताऊँगा, जिनका प्रयोग मैं सकारत्मक नजरिये को बनाए रखने के लिए करता हूँ। पहली आदत है **कृतज्ञता**। जिंदगी में आपको जो भी चीज मिली है, उसके लिए कृतज्ञ रहें। रोजाना मैं हर उस चीज की प्रशंसा करता हूँ, जो मुझे मिली है। मैं कहता हूँ :

''आज बहुत सुंदर दिन है।''

''इसने मुझे अच्छी सेहत और अच्छा दिमाग दिया है।''

''इसने मुझे भोजन और कपड़े दिए हैं।''

''इसने मुझे दूसरों की सेवा का एक और मौका दिया है।''

''इसने मुझे मानसिक शांति दी है और हर डर से मुक्ति दी है।''

''इन सभी वरदानों के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।''

इसके बाद **भौतिक समृद्धि** की आदत आती है। हर दिन आपको अपने मस्तिष्क में समृद्धि और प्रचुरता की चेतना भरना चाहिए। इसके साथ ही आपको अपने मस्तिष्क से गरीबी और अभाव के डर को बाहर निकालना चाहिए।

तीसरी आदत है **अच्छी सेहत** की आदत। हर दिन इस बारे में सोचें कि आप अपने शरीर की कैसी देखभाल कर रहे हैं, आप क्या खा रहे हैं, आप अपने तनाव का किस तरह सामना कर रहे हैं। स्वास्थ्य के बारे में सजग रहने से आपकी सेहत सुधरती है और अच्छी बनी रहती है।

चौथी आदत, **मानसिक शांति** का अभ्यास करें। खुद के बनाए सभी अवरोधों और खुद की बनाई हुई सभी सीमाओं से अपने मस्तिष्क को मुक्त करें। इस तरह अपने शरीर और मस्तिष्क को पूरा आराम दें।

अगली आदत है **आशा** की आदत। आपकी जो इच्छाएँ आज पूरी हो चुकी हैं, उनके लिए कृतज्ञ रहें। साथ ही यह आशा भी रखें कि आपके आने वाले कल के लक्ष्य भी पूरे हो जाएँगे।

छठी आदत है **आस्था**, चाहे आप इसका कुछ भी अर्थ लगाएँ। मैं ईश्वर के मार्गदर्शन के लिए उसके प्रति कृतज्ञ हूँ। मैं कृतज्ञ हूँ कि उसने मुझे वह काम करने के लिए प्रेरित किया, जिससे मुझे लाभ हुआ और वह काम करने से रोका, जिसे करने पर मुझे नुकसान होता।

अगली आदत है, **प्रेम** की आदत। इसमें न सिर्फ रूमानी प्रेम शामिल है, बल्कि देशप्रेम, परिवार का प्रेम, मित्रों का प्रेम और समस्त मानव जाति का प्रेम भी शामिल है। अपनी अमीरी को संपर्क में आने वाले लोगों के साथ बाँटने के लिए प्रेरित हों। अपनी जिंदगी में प्रेम के बारे में सचेत रहें, क्योंकि इससे जिंदगी मधुर बनती है और दूसरों के साथ आपके संबंध भी मधुर रहते हैं।

आठवीं आदत है **रोमांस** की आदत। उम्र ज्यादा होने के बावजूद रोमांस युवावस्था के उत्साह

को जगा देता है।

अंत में आती है **संपूर्ण बुद्धिमत्ता** की आदत। यह आपकी अतीत की असफलताओं, पराजयों, निर्णय व कर्म की गलतियों, सभी डरों, भूलों, निराशाओं और हर तरह के दुख को अनमोल व स्थायी दौलत में बदल देती है। इस आदत के कारण मुझमें दूसरों को प्रेरित करने की इच्छा व क्षमता विकसित हुई। इसी वजह से मैंने लोगों को प्रेरित किया, ताकि वे अपने मस्तिष्क के स्वामी बन सकें और जिदंगी की दौलत हासिल करने के लिए अपने मस्तिष्क की शक्ति का प्रयोग कर सकें। बुद्धिमत्ता से मुझे इस बात की प्रेरणा भी मिलती है कि मैं अपनी नियामतें उन लोगों के साथ बाँटूँ, जो उन्हें पाने के लिए तैयार हो चुके हैं। इस तरह दूसरों को लाभ पहुँचाकर मैं अपनी नियामतों को कई गुना बढ़ा लेता हूँ।

ईश्वरीय संपूर्ण बुद्धि के प्रति मैं कृतज्ञ रहूँगा, क्योंकि उसी ने मुझे यह सच्चाई बताई है कि कोई भी मानवीय अनुभव ऐसा नहीं है, जो इंसान को पीछे रोक सके। इसने मुझे यह भी बताया है कि हर अनुभव को उपयोगी सेवा में रूपांतरित किया जा सकता है। इसने मुझे सिखाया है कि विचार की शक्ति ही वह एकमात्र शक्ति है, जिस पर इंसान का पूरा नियंत्रण होता है। इसने मुझे यह भी सिखाया है कि विचार की शक्ति को इच्छानुसार सुख में बदला जा सकता है और इस शक्ति की सीमाएँ सिर्फ हम तय करते हैं।

ये नौ आदतें बारह दौलतों का लाभ उठाने के लिए आपके मस्तिष्क को तैयार करेंगी। वे एक माध्यम बन जाती हैं, जिसके द्वारा आप अपने मस्तिष्क को मनचाही चीजों पर केंद्रित कर सकते हैं और अनचाही चीजों से दूर ले जा सकते हैं। वे आपको हर तरह के नकारात्मक मानसिक नजरिये से बचाती हैं। इस तरह वे नकरात्मक विचार के बीज को नष्ट कर देती हैं और मस्तिष्क की मिट्टी में उस बीज को अंकुरित ही नहीं होने देती हैं। ये आदतें आपकी मदद करती हैं, ताकि आपका मस्तिष्क आपके प्रमुख लक्ष्य पर केंद्रित रहे और उसे हासिल करने के लिए आप अपनी पूरी क्षमता से काम कर सकें। इन आदतों की बदौलत आप अपने साथ, दुनिया के साथ और अपनी अंतरात्मा के साथ–शांति से रहते हैं।

ये आदतें उस ''सच्चे स्वरूप'' के अस्तित्व को उजागर करती हैं, जो उस शक्ति की प्रेरणा से सोचता है, चलता है, योजना बनाता है, इच्छा करता है और काम करता है, जो यह जानती है कि असंभव जैसी कोई चीज नहीं होती। इन आदतों ने बार–बार यह साबित किया है कि हर विपत्ति में उसके बराबर या समतुल्य लाभ का बीज छिपा होता है। इसलिए जब आप पर विपत्ति आती है, जो सब पर आती है, तो आप उससे घबराते नहीं हैं, बल्कि तत्काल ''समतुल्य लाभ के बीज'' की तलाश करने लगते हैं और उसे अवसर के रूप में अंकुरित करके उसका पूरा लाभ उठाते हैं। इस तरह इन आदतों ने सकारात्मक नजरिये को कायम रखने में मेरी बहुत मदद की है।

बारह दौलतों का उपयोग कैसे किया जाए

अब हम अपनी कहानी आगे बढ़ाते हैं। अब हम वह फिलॉसफी बताते हैं, जिसे बारह दौलतों को पाने के लिए अपनाना होगा।

दौलत हासिल करने के लिए मस्तिष्क को तैयार करने का तरीका मैं बता चुका हूँ। लेकिन यह तो सिर्फ शुरूआत है। मुझे अभी यह बताना है कि इंसान इन दौतलों का स्वामी कैस बन सकता है और उनका पूरा उपयोग कैसे कर सकता है।

कहानी एक सदी से भी पहले की है। इसकी शुरूआत एंड्रयू कारनेगी के जीवन से होती है। वे एक महान परोपकारी और अमेरिकी पूँजीवाद के प्रतिनिधि उद्योगपति थे। कारनेगी ने सभी बारह दौलतें हासिल कीं। इन दौलतों का आर्थिक हिस्सा इतना बड़ा था कि खुले हाथों से दान देने के बावजूद वे उसे अपने जीवनकाल में खत्म नहीं कर पाए। उनकी मृत्यु के बाद यह हिस्सा उन लोगों के पास आ गया, जो अब भी इसका प्रयोग मानव जाति के हित में कर रहे हैं। कारनेगी नौ आदतों में पूरी तरह निपुण थे। संपूर्ण बुद्धि से उन्हें इतना लाभ हुआ कि वे न सिर्फ अपनी भौतिक दौलत का दान करने के लिए प्रेरित हुए, बल्कि लोगों को एक ऐसी फिलॉसफी सिखाने के लिए प्रेरित हुए, जिसके द्वारा वे भी दौलत हासिल कर सकें।

इस फिलॉसफी में 17 सिद्धांत हैं, जो हर दृष्टि से अमेरिका के महान संविधान और अमेरिकी पूँजीवाद के सिद्धांतो के अनुरूप हैं।

इस फिलॉसफी को संकलित करने में बीस साल की मेहनत लगी। इसमें कारनेगी के अलावा पाँच सौ अन्य महान अमेरिकी उद्योगपतियों ने सहयोग दिया। इन सभी ने अमेरिकी पूँजीवाद में जिंदगी भर के व्यावहारिक अनुभव से सीखे गए सिद्धांत बताकर इस फिलॉसफी के संकलन में अपना योगदान दिया।

सफलता की फिलॉसफी को संकलित करने का कारण बताते हुए कारनेगी ने कहा था :

''मैंने अपना पैसा दूसरों की मेहनत से कमाया है और जितनी जल्दी हो सके, मैं इसे लोगों को वापस लौटाना चाहता हूँ। समस्या यह है कि मैं उन लोगों को दान नहीं देना चाहता हूँ, जो कुछ दिए बिना कुछ पाने की इच्छा से प्रेरित होते हैं। बहरहाल, धन मेरी सबसे बड़ी दौलत नहीं है। मेरी असली दौलत तो वह ज्ञान है, जिससे मैंने अमूर्त और मूर्त हर तरह की दौलत पाई है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि इस ज्ञान को एक फिलॉसफी का रूप देकर हर उस व्यक्ति को उपलब्ध कराया जाए, जो अमेरिकी अर्थव्यवस्था में अपने सुनहरे अवसर की तलाश करता है।''

कारनेगी लोगों को जो फिलॉसफी सौंपना चाहते थे, उसी से मुझे बारह दौलतें मिली हैं। आज जिंदगी में मेरे पास जो कुछ है, वह सब उसी फिलॉसफी से मिला है। मैं यहाँ जिन दौलतों के बारे में बता रहा हूँ, अगर आप उन्हें पाना चाहते हैं, तो आपको भी इस फिलॉसफी को अपनाना चाहिए और इस पर अमल करना चाहिए।

इस फिलॉसफी के सिद्धांतों को विस्तार से बताने से पहले मैं आपको संक्षेप में बताना चाहता हूँ कि अब तक इसकी बदौलत दुनिया भर के लोगों को कितना लाभ हुआ है :

इसका अनुवाद चार भारतीय भाषाओं में हो चुका है और यह भारत के 20,00,000 लोगों के लिए उपलब्ध हो चुकी है।

इसका अनुवाद पुर्तगाली भाषा में हो चुका है, जिससे ब्राजील में यह15,00,000 लोगों की सेवा कर चुकी है।

ब्रिटिश साम्राज्य में इसका एक विशेष संस्करण प्रकाशित हुआ है, जहाँ यह 20,00,000 से ज्यादा लोगों को अमीरी की राह दिखा चुकी है।

इसने अमेरिका के हर शहर, कस्बे और गाँव में लगभग 2,00,00,000 लोगों को लाभ पहुँचाया है।

चूँकि यह फिलॉसफी किसी धर्म पर आधारित नहीं है, इसलिए इसके माध्यम से दुनिया के सभी लोगों के बीच मित्रतापूर्ण सहयोग की भावना स्थापित की जा सकती है। इसमें मानवीय प्रयास के हर क्षेत्र में स्थायी सफलता और रचनात्मक उपलब्धियाँ पाने के सिद्धांत हैं।

यह सभी धर्मों का समर्थन तो करती है, लेकिन किसी का भी हिस्सा नहीं है।

यह इतनी सर्वव्यापी है कि यह अनिवार्य रूप से सभी लोगों को हर क्षेत्र में सफलता की तरफ बढ़ाती है।

लेकिन आपके लिए इस प्रमाण से ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि यह फिलॉसफी इतनी आसान है कि आप इस पर अमल करना अभी शुरू कर सकते हैं। आप इस समय जहाँ खड़े हैं, वहीं से शुरू कर दें। इसमें कोई शक नहीं है कि यह आपकी मदद करेगी।

ये 17 सिद्धांत एक विश्वसनीय नक्शे के रूप में आपकी सेवा करेंगे और आपको दौलत के स्त्रोत तक पहुँचाएँगे, चाहे वह दौलत भौतिक हो या अमूर्त। अगर आप नक्शे के मुताबिक चलेंगे, तो आप रास्ता भटक ही नहीं सकते हैं। बहरहाल, इसमें दिए सभी निर्देशों का अक्षरशः पालन करने के लिए कमर कस लें। प्रचुर दौलत का स्वामी बनने के बाद आने वाली जिम्मेदारी को उठाने के लिए तैयार रहें। और सबसे बड़ी बात, यह याद रखें कि स्थायी समृद्धि दूसरों के साथ बाँटना चाहिए। और यह भी कि किसी भी चीज को हासिल करने के लिए आपको उसकी कीमत चुकाना होगी।

अमीरी की चाबी इन 17 सिद्धांतों में से किसी एक सिद्धांत में नहीं छिपी है। इसका रहस्य तो इन सबके तालमेल में है। दरअसल, ये सिद्धांत 17 दरवाजे हैं, जिनसे होकर गुजरने के बाद ही आप उस अंदर वाले कमरे तक पहुँच पाएँगे, जिसमें समस्त दौलत का स्त्रोत ताले में बंद है। अमीरी की चाबी उस ताले को खोल देगी। जब आप चाबी पाने के लिए खुद को तैयार कर लेंगे, तो यह अपने आप आपके हाथ में में आ जाएगी। आपकी तैयारी का संबंध इन 17 सिद्धांतों में से पहले पाँच सिद्धांतों को समझने और उन पर अमल करने से है। मैं कल आपको इस बारे में विस्तार से बताऊँगा।

साभार :
अमीरी की चाबी आपके हाथ में।
नेपोलियन हिल
पृ.सं. 21 से 26 तक

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

हरि नाथ कुमार

प्रशासनिक अधिकारी

मो.: 9415727846

क्षेत्रीय महासचिव अखिल भारतीय अनुसूचित जाति/जनजाति एवं बुद्धिष्ट भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी कल्याण संघ उ0प्र0, उत्तराखण्ड एवं मंडलीय महासचिव (आ.बा.ज.का.) मंडल कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जगमोहन बामनिया

उप निदेशक श्रम विभाग
कानपुर (उ0प्र0)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय बौद्ध

सुपरिंटेंडेंट सी.जी.एस.टी.
सर्वोदय नगर, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

बी. के. दीपंकर

डिप्टी कमिश्नर
खण्ड–2, जी.एस.टी. विभाग
लखनपुर, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

नीरज पटेल

जनसम्पर्क अधिकारी/जोनल अधिकारी
जोन नगर निगम कानपुर उ0प्र0

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विजय गौतम

लेखाकार
कोषागार कानपुर नगर
मो0 : 9696222033

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो0 : 7905305856

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राम अवतार चौधरी

सहायक अभियन्ता जोन–6
जलकल विभाग नगर निगम
कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अरविन्द कुमार

प्रबन्धक उ0 प्र0 कॉपरेटिव बैंक लि0
शाखा डी. ए. वी. कालेज, कानपुर
मो0 : 9956976995

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सी. के. गौतम

डिप्टी कमिश्नर
खण्ड–25, जी.एस.टी. विभाग
लखनपुर, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कमलेश कुमार

प्रधान सहायक
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो0 : 9005201853, 7007615951

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

संजीव कनौजिया

क्षेत्रीय लेखाधिकारी
उ0प्र0 जल निगम, कानपुर
मो.: 8765212805

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

हीरालाल संखवार

उप डाकपाल
नवीन गल्ला मंडी, नौबस्ता, कानपुर
मो.: 9450156854

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

वीरेन्द्र कुमार भारतीय

सहायक लेखाधिकारी
श्रमायुक्त कार्यालय उ0प्र0, कानपुर
मो.: 9451318112

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धीरेन्द्र कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो.: 9721358899

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राज नारायण

वरिष्ठ सहायक
आई.टी.आई., पाण्डु नगर, कानपुर
मो0 : 9389328660

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सहाराम

प्रधान सहायक,
कार्यालय अपर श्रमायुक्त उ0प्र0
कानपुर क्षेत्र, सर्वोदय नगर, कानपुर
मो.: 9415893153

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

के. के. वर्मा

वरिष्ठ सहायक
उर्सला अस्पताल, कानपुर
मो0 : 9415430319

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

नीतू जैसवार

भाषा अनुदेशक हिन्दी
राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान महिला
लाल बंगला, कानपुर, मो.: 9838291001

हिन्दू धर्म मात्र एक जीवन शैली का नाम है

भारत के सर्वोच्च न्यायालय की संविधान पीठ ने 11 नवम्बर, सन् 2005 ई० को एक निर्णय में घोषित किया कि हिन्दुत्व भारतीयों की जीवन शैली है।

अभी गत् वर्ष 2005 ई० में जर्मनी पुस्तक मेले में हवाई अड्डे पर ईसाई, यहूदी, पारसी, इस्लाम इत्यादि धर्मावलम्बियों के लिए पृथक–पृथक उपासना–स्थल नियत थे किन्तु हिन्दुओं के लिए कोई स्थान निर्धारित नहीं था। सच्चाई यह है कि हमारे आचार्यों ने धर्म को बाहर निकलने ही नहीं दिया था। समुद्र पार करना जिन्होंने प्रतिबन्धित कर रखा है उनसे कैसे आशा की जा सकती है कि वे धर्म को विदेशों में जाने की अनुमति देगें।

हिन्दुओं में धर्म के नाम पर जो कुछ भी प्रचलित है, उसे विवेकानन्द जी ने जीवन पद्धति की संज्ञा दी है। चार वर्णों में बंटा समाज, कौन मन्दिर जाये कौन मन्दिर न जाये, कौन अच्छा खाये, कौन अच्छे वस्त्र पहने कौन नहीं, यह जीवन शैली नहीं तो और क्या है। एक ओर जीवन पद्धति की सांसारिक व्यवस्था और दूसरी ओर परमात्मा में प्रवेश, इस स्थिति में दोनों की क्या तुलना हो सकती है। जब यह धर्म ही नहीं हैं, मात्र जीवन शैली है तो धर्म से क्यों होड़ लगाते हैं।

शास्त्र सूत्र और सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाते रहने के लिए महापुरूषों के नाम से स्मृति ग्रन्थों की रचना करके जीवन पद्धति को धर्म धर्म कहकर भाव प्राण जनता के समक्ष रखा गया है और यह जनता इस जीवन पद्धति को ही धर्म समझ बैठी। शिक्षा को प्रतिबन्धित कर व्यवस्थाकारों ने इन स्मृतियों को भी छिपा कर रखा। इनमें लिखा है कि इन स्मृतियों को वही पढ़ सकता है। जो गर्भाधान से चिता तक का मंत्र जानता हो, अधिकांश ब्राह्मण भी इसे नहीं जानते हैं इन स्मृतियों में व्यवस्था थी कि जातिपाति में जीवन यापन करना ही धर्म है, उसका उल्लंघन करना अधर्म है। शूद्र मंदिर न जाये, शादी व्याह में भी कमर से ऊपर वस्त्र न पहने। वह गाय का दूध न पिये वरना नरक जायेगा। अध्ययन, अध्यापन पर ब्राह्मणों का एकाधिकार, मंत्री पद ब्राह्मण को, न्याय ब्राह्मण ही करेगा, राजा करता है तो नरक जायेगा। बड़े मामलों में ब्राह्मणों से राजा भी परापमर्श कर ले। धर्माध्यक्ष ब्राह्मण की इस व्यवस्था को धर्म कहने की भूल का सुधार क्यों न कर लिया जाये। इस प्रयास में सर्वप्रथम धर्म को उन धर्माचार्यों से मुक्त कराना होगा। जो धर्म को जकड़े बैठे हैं। धर्म बचा था महापुरूषों के चिन्तन में जो शान्त एकान्त जंगल में जो चिन्तनरत थे। उनके हृदय में धर्म तब भी सुरक्षित था, आज भी है, उनसे धर्म की परिभाषा लें।

आज लाखों करोड़ों हिन्दुओं का धर्मान्तरण हो रहा है। आज आवश्यकता है एक ऐसे धर्म शास्त्र की जो झोपड़ी से महलों तक सबको एक जैसा आश्वस्त कर सके। जिससे ऊँच नीच, अमीर–गरीब, सब एक थाली में खाने लगे, एक माँ की संतान के रूप में सब को पहचानने लगे। धर्म अपको मन, क्रम, वचन से एक परमात्मा के प्रति समर्पण दिलाता है। आज भारत शास्त्र विहीन है, भटक रहा है, जिसने जो कह दिया धर्म बन बैठा, करोड़ों भगवान करोड़ों मंत्र, करोड़ों पूजा–पद्धतियों में पूजा का पुतला, ऋषियों की संतान भारत भटक रहा है ये बौद्धिक निर्णय की देन है कि व्यवस्था रीति–रिवाज ही धर्म का स्थान ले लेते हैं। भगवान श्री कृष्ण के समय में भी भारत में अनेक कुरीतियाँ मौजूद थी। भगवान ने उन कुरीतियों का निवारण किया। गीता के द्वारा उन्होंने बताया कि हम–आप सभी एक ईश्वर की संतान है। और उतने ही पावन है जितने भगवान है। मात्र जीवन शैली को धर्म की संज्ञा देना भयंकर भूल है।

बहुजन विचार मंच, कानपुर नगर, संयोजक – सी० पी० ओमर, मो० : 9305256450

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आनन्द मोहन

संयुक्त आयुक्त
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निदेशालय, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामनरेश महासचिव (आई.टी.सेवा) | **महेन्द्र कुमार** अध्यक्ष

एस.सी./एस.टी. एम्पलाइस वेलफेयर एसोसिएशन, आयकर विभाग, कानपुर
मो.: 7599101755

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जगजीवन राम

मण्डलीय अध्यक्ष
मो.: 9450134953

अखिल भारतीय अनु. जाति जनजाति एवं बुद्धिष्ट
भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी कल्याण संघ

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

चन्द्र प्रकाश

सहायक अधीक्षक, डाकघर
कानपुर मु० प्रखण्ड
मो० : 9450726358

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

के. पी. वर्मा

उपायुक्त
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निदेशालय, कानपुर
मो० : 9415268129

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रताप सिंह

प्रशासनिक अधिकारी
मुख्य अभियंता कार्यालय, लोक निर्माण विभाग, कानपुर
मो.: 9415430469

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मधु पत्नी राजेन्द्र कुमार कुरील

जीवन एवं स्वास्थ्य बीमा अभिकर्ता (एजेन्ट)
मो० : 9838239138

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कमलेश कुमार

वरिष्ठ प्रबन्धक
उ.प्र. राज्य हथकरघा निगम, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबन्धन एवं जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामस्वरूप

उपाध्यक्ष
राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद कानपुर नगर
कार्यालय श्रमायुक्त जी.टी. रोड, कानपुर
मो.: 8318468803

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामचरन

पम्प आपरेटर
कानपुर विकास प्राधिकरण
मो० : 9984251800

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जगदीश प्रसाद

कनिष्ठ सहायक
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निदेशालय, कानपुर
मो० 7388352445

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

भूप सिंह

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो० : 9455646040

राम शंकर कुरील
जिलाध्यक्ष
मो.: 9415735880

राम नारायण निषाद
महानगर अध्यक्ष
मो.: 8840913919

बहुजन समाज पार्टी की ओर से सभी नगरवासियों को 75वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

मेवालाल
सम्प्रेक्षक रा.क.स.प.कानपुर

राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद
की ओर से समस्त कर्मचारी साथियों/मित्रों को
75वें स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ
वरिष्ठ उपाध्यक्ष
उ० प्र० फेडरेशन ऑफ मिनी. स्टाफ एसो० कानपुर

EQUALITY OPPORTUNITY JUSTICE & WELFARE
SELF CONFIDENCE
UNITED RESPONSIBILITY
Estd.14 April, 1974
DIVISIONAL UNIT - KANPUR

75वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

एक संस्था एक एसोसिएशन

अखिल भारतीय अनुसूचित जाति/जन जाति एवं बुद्धिष्ट भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी कल्याण संघ की ओर द्रविड़ भारत मासिक पत्रिका परिवार के सभी सदस्य गण, पाठक गण व समाज के सभी लोगों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं .....

सी. एल. कुरील (अखिल भारतीय सचिव (विधि)), महेन्द्र प्रताप (क्षेत्रीय अध्यक्ष), हरि नाथ कुमार (क्षेत्रीय महासचिव), विनोद कुमार (क्षेत्रीय सचिव प्रशासन), राजेन्द्र प्रसाद (क्षेत्रीय कोषाध्यक्ष), प्रमोद कुमार (क्षेत्रीय सचिव संपर्क), जगजीवन राम (मंडलीय अध्यक्ष), सुरेन्द्र गौतम (मंडलीय उपाध्यक्ष), संतोष कुमार (मंडलीय महासचिव), रधुनंदन प्रसाद, ओम प्रकाश कुरील, वेद पाल आजाद, रवि मोहन सोनकर, टी.सी. सोनकर, श्रीमती गीता रावत, श्रीमती अनीता वर्मा, अशोक गौतम, राम अवध, स्वतंत्र कुमार, राकेश कुमार, गोविन्द कुमार, योगेन्द्र कुमार, रमेश वर्मा आदि कानपुर मंडल के सभी सदस्य व पदाधिकारी गण।

कानपुर विकास प्राधिकरण

प्राधिकरण की पूर्ण विकसित योजना सुजातगंज में ई-ऑक्शन के माध्यम से स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर घर बैठे आवासीय भूखण्ड प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर

कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर की सुजातगंज योजना में रिक्त आवासीय भूखण्डों की नीलामी ई-ऑक्शन के माध्यम से की जानी है इस हेतु आवेदकों को प्राधिकरण की बेवसाइट www.kdaindia.co.in से ई-ऑक्शन से लिंक पर जाकर रजिस्ट्रेशन कराने तथा निर्धारित पंजीकरण धनराशि जमा कराने के पश्चात् आवेदक घर से अथवा अन्य कही से भी कम्प्यूटर अथवा मोबाइल के माध्यम से बोली लगा सकता है। प्राधिकरण द्वारा आवेदकों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए एक Kanpur Development Authority नाम की मोबाइल एप भी तैयार की गई है जिसमें आवेदक Google Play Store से डाउनलोड कर इसके माध्यम से भी ई-ऑक्शन में प्रतिभाग कर सकते है।

नीलामी/बिडिंग प्रारम्भ दिनांक व समय :-16.08.2021 प्रातः 11:00 बजे से

नीलामी/बिडिंग अन्तिम दिनांक व समय :- 30.08.2021 अपरान्ह 04:00 बजे तक

रिक्त भूखण्डों की तालिका

	योजना का नाम	भूखण्ड सं0	भू-प्रयोग	क्षेत्रफल (वर्गमी0) प्रत्येक	रोड की चौड़ाई (मी0)	आरक्षित दर रू0 प्र0व0मी0	कुल मूल्य रू0	पंजीकरण धनराशि रू0
1	सुजातगंज ब्लाक-बी	252, 254, 256, 257, 258, 260, 261, 145, 171 से 178 तक	आवासीय	297.66	40 फिट	28,500.00	84.83 लाख	8.4 लाख
2	सुजातगंज ब्लाक-डी	33 बी	आवासीय	669.77	40 फिट	28,500.00	190.88 लाख	19 लाख

• आवंटन के मुख्य नियम व शर्तें :-

1. नीलामी की मुख्य शर्ते कानपुर विकास प्राधिकरण के बेवसाइट पर उपलब्ध है।
2. नीलामी की स्वीकृति/अस्वीकृति का सम्पूर्ण अधिकार उपाध्यक्ष, कानपुर विकास प्राधिकरण के पास सुरक्षित रहेगा।

डॉ0 गुडाकेश शर्मा
अपर सचिव

Helpline : 2556292, 2557853
Web: www.kdaindia.co.in

अरविन्द सिंह
उपाध्यक्ष

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

रोशन लाल

फोरमैन सिविल इंजी. विभाग
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो० : 9839791024

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं .....

सुरेन्द्र कुमार कमल

स्टोर कीपर

कर्मचारी राज्य बीमा चिकित्सालय
पाण्डु नगर, कानपुर

मो०: 9454057381

**जल अमूल्य निधि

**जल ही जीवन

जलकल विभाग, नगर निगम, कानपुर

जल संरक्षण के हित में उपभोगताओं से अपील

कम सं0	क्या करें	कम सं0	क्या न करे
1-	जलकल विभाग अथवा इण्डिया मार्क–।। हैण्डपम्प का पानी पीने में प्रयोग करें।	1.	अनाधिकृत रूप से ठेलियों/ट्राली पर पानी बेचने वालों के पानी का प्रयोग न करें।
2-	पानी की लाइन लीक होने पर उसे नियमानुसार तुरन्त ठीक करायें ।	2.	जल अमूल्य निधि है। इसका दुरूपयोग/अपव्यय न करें।
3-	आपकी पाइप लाइन नाली अथवा किसी अन्य गन्दे स्थान से हो कर जा रही हों तो पंजीकृत प्लम्बर से उसका मार्ग परिवर्तित करा लें अथवा इस पर केसिंग पाइप अवश्य लगवा लें। सर्विस पाइप लाइन पुरानी अथवा क्षत्तिग्रस्त हो गयी हो तो उसे तत्काल बदलवा लें। अन्यथा गन्दा पानी पेयजल को प्रदूषित करेगा।	3.	पानी की लाइन में बूस्टर पम्प लगा कर, सीधे पानी न लें। यदि आवश्यक हो तो टब अथवा टैंक में जलकल के नल से पानी एकत्र कर उसे बूस्टर पम्प द्वारा ऊपर चढ़ायें।
4-	हैण्डपम्प का प्लेट फार्म साफ रखें।	4-	हैण्डपम्प के चारों तरफ गन्दा पानी एवं गन्दगी न एकत्र होने दें।
5-	यदि पीने के पानी में जरा भी संदेह हों तो उसे उबाल कर पियें व गन्दा पानी आने पर जलकल विभाग के क्षेत्रिय कार्यालय अथवा जल संस्थान कन्ट्रोल रूम फोन नं0– 2549018 में तुरन्त फोन पर सम्पर्क करें।	5-	सीवर मेनहोल में कूड़ा करकट न डालें तथा मेनहोल खुला होने पर तत्काल कन्ट्रोल रूम को सूचित करें।
6-	जलकल विभाग की पाइप लाइन में लीकेज होने पर तत्काल जल संस्थान के कंट्रोल रूम 2549018 पर इसकी जानकारी दें।	6-	पानी लेने के बाद नल/स्टैण्ड पोस्ट खुला न छोड़ें।
7-	पानी एकत्र करने के लिये ढक्कन युक्त साफ बर्तन का प्रयोग करें।	7-	पानी के बर्तन में हाथ न डालें, पानी निकालने के लिये लम्बे हैन्डल के बर्तन का प्रयोग करें।

जन सामान्य के अच्छे भविष्य हेतु जल – संरक्षण

1- बैठको सेमीनारों प्रदर्शनियों एवं सांस्कृतिक कार्यकमों में जहॉ पेयजल आवश्यक हो, एक लीटर के पानी के बोतल के स्थान प 250–300 मिली0 के पानी के बोतल का इस्तेमाल किया जाय, जिससे इस अमूल्य संसाधन के अपव्यय से बचा जा सके।

2- जन सामान्य पानी पीने हेतु छोटे बर्तन/गिलास का उपयोग करें। प्रायः यह देखा जाता है कि लोग बड़े गिलास/बर्तन में पा लेकर एक या दो घूँट पानी पीने के बाद शेष पानी फेक देते है। इस लिये उतना ही पानी लिया जाये जिसे पिया जा सके।

3- प्रायः यह देखा जाता है कि लोग पीने के पानी (ट्रीटेड) से अपने लान, किचेन, गार्डेन, फूलों की क्यारियों की सिचाई तथा गर्मि में घर के सामने की सड़क भिगातें है ताकि धूल न उड़े। जनमानस से अनुरोध किया जाता है कि पेयजल की महत्ता प पहचाने एवं इस अमूल्य धरोहर/संसाधन के अपव्यय से बचने का प्रयास करें।

4- ताजा पानी के उपयोग हेतु सांय/विगत दिवस में संरक्षित पीने के पानी को न फेके/बर्बाद न करें।

5- सर्विस स्टेशनों द्वारा गाड़ी धोने में पीने के पानी का प्रयोग न करें।

– बकाया जलकल/जलमूल्य/सीवर कर का भुगतान समय से कर छूट का लाभ प्राप्त करें।
– जलकल विभाग का कन्ट्रोल रूम का फोन नं0– 2549018 है।
– क्षेत्रिय कार्यालय के अधिशासी अभियन्ताओं के दूरभाष नम्बरः– जोन–1 9235553847, जोन–2 9235553823, जोन–3 9235553821, जोन–4 9235553843, जोन–5 9235553816, जोन–6 9235553818,
– किसी भी अनजान व्यक्ति को इण्डिया मार्क–।। हैण्डपम्प उखाड़ कर न ले जाने दें।

महाप्रबन्धक	नगर आयुक्त	महापौर
नीरज गौड़	शिवशरण अप्पा जी.एन.	प्रमिला पाण्डेय